International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-05-2021, Accepted: 25-05-2021, Published: 15-06-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 85-88

राष्ट्रीय चरित्र निर्माणः भारतीय शिक्षा दर्शन का उद्देश्य

डॉ. सतीश कुमार पांडेय
डीन (शिक्षा संकाय), प्राचार्य, शिक्षा महाविद्यालय मैसूर, कर्नाटक, भारत

सारांश
राष्ट्र और उसके नागरिकों एक घनिष्ठ सम्बन्ध होता है । राष्ट्र हमारे सुरक्षा और संप्रभुता का अनिवार्य अवयव है । राष्ट्रीय सुरक्षा, शांति स्थापना, उन्नति व प्रगति हेतु शिक्षा का विशेष महत्व है। राष्ट्र के प्रति मानव के कुछ कर्तव्य होते हैं उनके निर्वहन के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा का कार्य अपने राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता का प्रचार करना होता है, किन्तु आधुनिक समय में हमारी शिक्षा स्वयं का ही अस्तित्व नहीं बचा पा रही है, तो राष्ट्र गौरव की रक्षा कैसे संभव है। राष्ट्र के गौरव को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि अपनी राष्ट्रभाषा, संस्कृति व सभ्यता को संरक्षित रखने के प्रयास किए जाए, तभी हम अपने परिवार, समाज व राष्ट्र के अस्तित्व को स्थापित रख पाएंगे।
परिवार से लेकर राष्ट्र तक का उचित विकास आदर्श शिक्षा पर ही निर्भर करती है। अतरू स्पष्ट है की यदि हम अपने राष्ट्र को प्रगतिशील बनाना चाहते हैं तो अपनी आदर्श शिक्षा प्रणाली को महत्व देना हमारा प्रमुख कर्तव्य है। शिक्षा राष्ट्र के युवाओं के चरित्र निर्माण के साथ–साथ उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाती है। आत्मनिर्भर नागरिक ही आत्मचिंतन के बल पर परिवार समाज तथा राष्ट्र को एक बेहतर स्थिति प्रदान कर सकते हैं।

मूलशब्दः राष्ट्र, राष्ट्रीय, शिक्षा, कर्तव्य, अधिकार, नागरिक, समाज, चरित्र निर्माण, उच्च शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा, राष्ट्रभाषा, संस्कृति, सभ्यता।

प्रस्तावना
राष्ट्र का साधारण अर्थ एक समुदाय के लोगों का एक ही राज्य में समान राजनैतिक व्यवस्था के अंतर्गत रहना है। यथार्थ में राष्ट्रीयता के आधुनिक सिद्धांत का आधार किसी रूप में लोगों के द्वारा एक विशेष राजनैतिक व्यवस्था स्वीकार किया जाना है। इस तरह एक ही राज्य में, एक ही राजनैतिक व्यवस्था के अंतर्गत स्वेच्छा से रहने या रहने का प्रयत्न करने को, एक राष्ट्र की परिभाषा मानना उचित होगा। अगर बात राष्ट्र की प्रगति की आती है तो शिक्षा के अभाव में राष्ट्र का कल्याण संभव नहीं सकता। कोई भी राष्ट्र शिक्षा के अभाव में उन्नति के सोपान नहीं चढ़ सकता।
शिक्षा प्रणाली किसी भी राष्ट्र के उत्थान में तथा नागरिक चरित्र निर्माण में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। शिक्षा प्रणाली का सीधा असर राष्ट्र के भविष्य और नागरिकों के विकास पर होता है। शिक्षा नागरिकों को उनके आदर्शों एवं कर्तव्यों से अवगत करती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली अपने लक्ष्य से कुछ भटक गई है। अंग्रेजी की ललक, पाश्चात्य संस्कृति की चाहत में भारतीय संस्कृति कहीं धूमिल हो रही है। आवश्यकता है ऐसा शिक्षा तंत्र तैयार करने की जो शिक्षा के भारतीय भाषाओं में प्रचार – प्रसार के साथ – साथ हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखें तथा तत्संबंधी लक्ष्यों की प्राप्ति का हेतु बन सके।
शिक्षा ऐसी हो जो अपने राष्ट्र, संस्कृति, परिवेश, रीति रिवाज, परंपराओं पर गर्व करना सिखाएं व अनेकता में एकता के प्रतीक भारत के लोगों को समन्वय और भ्रातृत्व का बोध कराएं। शिक्षा राष्ट्र के चरित्र को सँवारे, संभालें, नैतिक व मानवीय मूल्यों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से संचार करे। शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता से शिक्षा सही मायनों में सभी संकीर्णताओं, अज्ञान, अंतर्विरोधों और दुविधाओं से मुक्त करने वाली बनें। आदर्श शिक्षा प्रणाली, मानवीय कर्तव्य, नागरिक अधिकार, राष्ट्र चरित्र निर्माण में शिक्षा का महत्व आदि विषयों के अध्ययन से पूर्व राष्ट्र क्या है? राष्ट्र का अर्थ और परिभाषा को और अधिक स्पष्ट करते हुए सर्वप्रथम प्रस्तुत लेख में राष्ट्र तथा राष्ट्रवाद के अर्थ का अध्ययन करेंगे।
राष्ट्र तथा राष्ट्रवाद राष्ट्र शब्द अंग्रेजी के शब्द 'नेशन' का अनुवादित शब्द है। 'नेशन' शब्द लैटिन भाषा के 'नेशीऊ' शब्द से लिया गया है। लैटिन में 'नेशीऊ' शब्द का अर्थ जन्म या जाति है। राष्ट्र की परिभाषा के बारे में वैज्ञानिकों के मत अलग – अलग हैं, कई विद्वानों ने 'नेशन' शब्द के दृष्टिकोण से राष्ट्र को परिभाषित किया तो कई वैज्ञानिकों ने राजनैतिक दृष्टिकोण से और अनेक विचारकों ने सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से राष्ट्र शब्द को परिभाषित किया।
इस व्याख्या से राष्ट्र की दो आवश्यक शर्तें पूरी होती हैं। अन्य दूसरे लक्षण जो हम वर्तमान राष्ट्र के स्वरूप में देखते हैं, वे राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने वाली पूर्व दशाएं हैं। एक आदर्श राष्ट्र की पूर्व दशाएं हैं एक सघन भौगोलिक क्षेत्र में मनुष्यता का रहना, जाति, धर्म, भाषा और सांस्कृतिक एकता तथा समान इतिहास। यदि मनुष्यों के समुदाय में ये सारी विशेषताएं पाई जाती हैं, तो वह एक राष्ट्र बन जाता है।
राष्ट्रीयता का वृहद एवं मूर्त रूप राष्ट्र होता है, तथा राष्ट्र से संबंधित भाव राष्ट्रीयता है। दोनों एक ही सूत्र से उत्पन्न होते हैं। राष्ट्रीयता और राष्ट्र से सम्बद्ध अवयव राष्ट्रवाद है। राष्ट्रवाद मानव समूह के अंदर विकसित होने वाली वह धारणा है जो उस निश्चित भू क्षेत्र के समग्र विकास के लिए संकल्पबद्ध हो। अपने स्वार्थ और व्यक्तिगत इच्छाओं से ऊपर उठ कर हम जब समस्त मानव समूह व समाज के हित के लिए तथा समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं आर्थिक विकास के प्रति समर्पित हो जाते है, तब वह भावना राष्ट्रवाद कहलाती है।
भारतीय राष्ट्रवाद एक आधुनिक तत्व है इस विषय का अद्यायन अनेक दृष्टिकोण से किया जा सकता है। भारत के विभिन्न काल का अध्ययन करें तो अंग्रेजी शासन के आगमन से पहले समाज की संरचना अन्य देशों से भिन्न थी। मुगल काल में भारत की आर्थिक दशा यूरोपीय देशों से भिन्न थी। भारत देश में प्रारंभ से

ही विभिन्न भाषाओं का अधिकार था। हिन्दू समाज के लोगों की जनसंख्या अत्यधिक थी। धीरे–धीरे हिन्दू जातियाँ उपजातियों में विभक्त होने लगी। हिंदुओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक संरचना तथा धार्मिक अनुष्ठानों की पद्धति अलग अलग थी। इसी प्राक्कर जब भारत देश अपनी विभिन्न संरचना का रूप साकार कर रहा था उसी समय राष्ट्रवाद का उदय हुआ।

कर्तव्य व अधिकार जहां राष्ट्र की बात होती है, वहाँ कर्तव्य स्वत: जुड़ जाता है। राष्ट्र के लोगों द्वारा दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना ही सरल शब्दों में उनका कर्तव्य कहलाता है। राष्ट्रवाद का सीधा संबंध हमारे कर्तव्यों से होता है। यदि हम स्वयं को देश का नागरिक मानते है तो उस देश के प्रति हमारे कर्तव्य भी होते हैं। यही कर्तव्य मानव को आदर्श नागरिक के रूप में उजागर होने के अवसर प्रदान करते हैं। बस आवश्यकता है– ईमानदारी व लगन से देश सेवा के भाव की तथा राष्ट्र की उन्नति की चाहत की। स्वार्थ व लोभ को त्यागना अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना ही कर्तव्य कहलाता है। कर्तव्य मानव के व्यक्तित्व को निखार व पहचान प्रदान करता है।

कर्तव्य उन कार्यों को कहा जाता है, जिन्हें नैतिक रूप से करने के लिए व्यक्ति प्रतिबद्ध रहता है। कर्तव्य सामान्यतरू वह कार्य होते हैं, जिन्हें व्यक्ति को अनिवार्य रूप से करना चाहिए। कर्तव्य के साथ अधिकाशतरू अधिकार शब्द भी जुड़ा रहता है। कर्तव्य और अधिकार दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक व्यक्ति का अधिकार दूसरे का कर्तव्य होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी राष्ट्र के नागरिक का अधिकार अपराध रहित समाज में निवास करना है, तो अशांति रहित समाज का दायित्व राष्ट्र की कानून व्यवस्था का होता है। अत: एक नागरिक का अधिकार कानून से संबंधित वरिष्ठ पदाधिकारियों का कर्तव्य है।

इस प्रकार जो राष्ट्रीय कर्तव्य हैं, वही राष्ट्रीय अधिकार भी हैं। राष्ट्रीय एकीकरण के लिए शिक्षा एक अमोघ अस्त्र है। शिक्षा लोगों में एकता, भाईचारा व सहिष्णुता के भावों को उत्पन्न करती है। दूसरों के प्रति आदर, स्नेह, विश्वास की भावना पैदा करती है। अतरू राष्ट्र के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा व्यक्ति के मन, दिमाग, अंतरू वृतियों को जागृत करके व्यवहार में परिशोधन लाती है। राष्ट्र, कर्तव्य और अधिकार को स्पष्ट करने के पश्चात अब हम शिक्षा के अर्थ व परिभाषा को समझने का प्रयास करेंगे। उसके बाद शिक्षा का राष्ट्र निर्माण में महत्व व भूमिका पर दृष्टिपात करेंगे।

यदि हम शिक्षा दर्शन की व्याख्या करना प्रारम्भ करते है तो उसमें प्रथम जिज्ञासा का विषय है– 'शिक्षा का इतना प्रचार–प्रसार हुआ कि शिक्षा शब्द का प्रयोग कभी विस्तृत व व्यापक रूप में तो कभी संकुचित रूप में किया जाने लगा है।' विस्तृत अर्थ के अनुसार– ''समस्त मानव जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है।'' हमारे व्यवहार जो हमारी ज्ञान की परिधि को विस्तृत करते हैं, हमारी अर्न्तदृष्टि की क्षमता को अथाह करते है, हमारी प्रतिक्रियाओं को परिष्कृत करते है, हमारी भावनाओं एवं क्रियाओं को उत्तेजित करते है और किसी न किसी रूप में हमें प्रभावित करते हैं, इन समस्त क्रियाओं द्वारा हम शिक्षित होते है। संसार का प्रत्येक अनुभव हमें किसी न किसी प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है जिसके माध्यम से हमारे भावी व्यवहारों का परिष्कार होता है।

संक्षिप्त अर्थ में 'शिक्षा' किसी निश्चित समाज या समुदाय की उस व्यवस्था तक परिमित है जिसके अनुसार उस समुदाय की रीति, नीति, उसका इतिहास, वृति और प्रवृति, परम्पराएं, आकांक्षाएं एवं ज्ञान पद्धति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रदान कर दिया जाए ओर दूसरी पीढ़ी उन्हीं के अनुसार शिक्षा प्राप्त करके अपने क्रिया–कलापों को सम्पन्न करने हेतु तैयार हो सकें इस प्रकार विस्तृत अर्थ में 'विकसित जीवन' और संक्षिप्त अर्थ में 'किसी निश्चित प्रणाली के अन्तर्गत जीवन की तैयारी ही शिक्षा है।' अनेक व्याख्याएँ प्रस्तुत की है।

एडीसन ने शिक्षा की व्याख्या करते हुए लिखा है कि– 'शिक्षा जब किसी श्रेष्ठ पुरूष के मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है तब उसके सभी सुप्त गुणों एवं पूर्णताओं को बाहर प्रकट कर देती है। यदि उसे शिक्षा न मिलती तो वे गुण और पूर्णताएं कभी प्रकट न हो पाती। सामान्यतः यह माना जाता है कि शिक्षा ऐसी कला है जो बालक की शारीरिक, मानसिक और नैतिक शक्तियों को विकसित करें।'[1]

विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी की शिक्षा के प्रति समर्पण के भावों को व्यक्त करते हुए कहा " रवीन्द्रनाथ ठाकुर का सर्वाधिक सबल पक्ष उनका शिक्षा दर्शन है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपने समय की शिक्षा व्यवस्था के प्रति नाराजगी प्रकट करने तक ही सीमित न रहे। अपितु उन्होंने शांतिनिकेतन में वैकल्पिक शिक्षा के स्वरूप को प्रत्यक्ष कर दिखाया।"[2]

पेस्टालौजी ने शिक्षा की व्याख्या हेतु अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि– ''मनुष्य की स्वाभाविक शक्तियों का प्राकृतिक, सर्वांगीण और प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है।''[3]

इनके अनुसार शिक्षा वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य के स्वाभाविक गुणों में उभार आता है और उन गुणों व कौशलों के विकसित होने के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं। स्वाभाविक व जन्मजात कौशलों का विकास ही मनुष्य को प्रगतिशील बनाता है।

महात्मा गाँधी ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है– ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य यह है कि बालक या मनुष्यों के शरीर, मन और आत्मा के व्यापक श्रेष्ठ तत्व विकसित कर दिए जाए।''[4]

महात्मा गांधी ने शिक्षा को मानव के सर्वागींण विकास का साधन माना है। शिक्षा मानव की शारीरिक मानसिक, बौद्धिक व आत्मिक उन्नति में सहायक होती है।

अथर्ववेद के अनुसार शिक्षा का तात्पर्य है– ''बालक या मनुष्य को इस योग्य बना देना कि उसमें श्रद्धा और मेधा उत्पन्न हो, वह संतति का उद्घाटन कर सके तथा धन आदि अमृत तत्व प्राप्त कर सकें।''[5]

अथर्ववेद के अनुसार शिक्षा मानव में नैतिक गुणों का विकास करती है जैसे- श्रद्धा, दया, परोपकार, करुणा एवं संवेदना। नैतिक विकास के साथ ही मनुष्य सृष्टि में सहयोग करके धन अर्जन हेतु सामर्थ भी बनता है। जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष का साधन भी शिक्षा के माध्यम से होता है। शिक्षा की परिभाषा मात्र पुस्तकीय ज्ञान नहीं बल्कि आध्यात्मिकता का भाव भी है।

अर्थात वैदिक ऋषियों के अनुसार शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसको प्राप्त करके बालक या मनुष्य अपना हित करने योग्य बन सकता है। नैतिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करके मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। उचित –अनुचित का ज्ञान प्राप्त कर सकता है तथा शिक्षा के माध्यम से ऐसी दिव्य सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है जिससे वह स्वयं का हित कर सकता है और दूसरों का भी हित कर सकता है। तात्पर्य यह है कि शिक्षा की प्राप्ति करके मनुष्य को एक ऐसी सामर्थ्य या शक्ति को उत्पन्न करना चाहिए जिससे उस परम ज्ञान को प्राप्त कर सकें और किसी का भी अहित न करे और न तो किसी के अहित की कल्पना ही करें।

उचित अर्थो में शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो मनुष्य को चरित्र विकास, बौद्धिक विकास एवं धार्मिक विकास में सहायक होती है। शिक्षा ही मनुष्य को सभ्य और संस्कारिक बनाती है। यही नही बल्कि शिक्षा ही मनुष्य को आदर्श, श्रेष्ठ और सद्चरित्र बनाने का कार्य करती है किन्तु शिक्षा मात्र किताबी नहीं होनी चाहिए। उचित–अनुचित के बीच के अन्तर का ज्ञान करने वाली होनी चाहिए, स्वयं का एवं दूसरों का हित परक विचारों के आगमन की बौद्धिक क्षमता को विकसित करने वाली होनी चाहिए।

राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में शिक्षा का महत्व विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की सफलता का आधार जागरूक और प्रभुत्व जनमत ही हो सकता है। लोकतंत्र की सफलता वहाँ के नागरिकों को शिक्षित बनाने और अपने कर्तव्यों व अधिकारों के प्रति जागरूक और सचेष्ट बनाने में है। शिक्षा और लोकतंत्र वास्तव में एक दूसरे के पूरक हैं। लोकतंत्र के विकास के लिए शिक्षा और शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए लोकतंत्र का होना आवश्यक है। भारत जैसे देश में जहाँ सबके मंगल और उन्नति की कामना की जाती है, वहाँ शिक्षा सबके लिए एक महत्वपूर्ण संबल है क्योंकि शिक्षा के बिना मानव की उन्नति व प्रगति होना संभव नहीं।

शिक्षा प्रतीक है- स्वतंत्रता, विकास और आत्मनिर्भरता की। शिक्षा ही मानव को आत्मनिर्भर बनाती है। शिक्षा की परतंत्रता की बेड़ियों से आजाद करती है। शिक्षा शोषण से रक्षा करती है। शिक्षा के द्वारा ही शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक, मानवीय एवं राष्ट्रीय गुणों का विकास होता है। शिक्षा के माध्यम से ही मन दृ मस्तिष्क की शक्तियों को एकजुट किया जा सकता है। शिक्षा का संबल थाम कर ही समय और स्थान के अनुसार घटनाओं, विचारों एवं अपने दृष्टिकोण को मानव अधिक सहजता से प्रकट करने में समर्थ हो सकता है।

शिक्षा ज्ञान और जानकारी को प्राप्त करने का ही माध्यम नहीं है बल्कि शिक्षा ही शिक्षा का विस्तार करती है। एक शिक्षित व्यक्ति अनेक लोगों को शिक्षित कर सकता है। शिक्षा के प्रचार और प्रसार की गति अत्यधिक तीव्र होती है। आवश्यकता है–शिक्षा के महत्व को समझने की। जिन राष्ट्रों ने शिक्षा के महत्व और आवश्यकता को समझा वे राष्ट्र आज शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति के शिखर पर विराजमान हैं। एक शिक्षित व्यक्ति से एक परिवार शिक्षित होता है, परिवार से समाज और समाज से सम्पूर्ण राष्ट्र शिक्षा का अस्तित्व इसी प्रकार विस्तार प्राप्त करता है।

शिक्षा के विस्तार तथा लोकप्रियता उस राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। शिक्षा प्रणाली किसी भी राष्ट्र के उत्थान में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। शिक्षा प्रणाली का सीधा प्रभाव राष्ट्र के भविष्य और नागरिक के विकास पर पड़ता है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा निरंतर राष्ट्र के निर्माण में सहयोग देते हैं। जहां प्राथमिक शिक्षा बालक को नैतिक शिक्षा का ज्ञान प्रदान करती है, वहीं उच्च शिक्षा प्रणाली मानव को आत्मनिर्भर बनने में सहायक होती है। यही नहीं बल्कि उच्च शिक्षा राष्ट्र के समुचित निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कोई भी राष्ट्र शिक्षा के अभाव में उन्नति के पथ पर नहीं चल सकता। उच्च शिक्षा यह निर्धारण करती है कि हमारे युवाओं की शिक्षा कैसी होनी चाहिए? क्योंकि शिक्षा ही नागरिक को आदर्शों और कर्तव्यों से अवगत कराके एक आदर्श नागरिक बनाती है। इसीलिए उच्च शिक्षा प्रणाली के निर्धारकों को उच्च शिक्षा नीति निर्धारण करते समय यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति की शिक्षा एवं ज्ञान का उपयोग हो। ऐसा होने से हमारे समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में उनकी सहभागिता होगी।

बहुतायत ऐसा देखने में आता है की उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति धीरे धीरे समाज या राष्ट्र से कट जाता है और अधिक धन कमाने की लालसा में अन्यत्र उन्मुख हो जाता है। ऐसी स्थिति में जो शिक्षा प्रणाली मानव के चरित्र को बचाए नैतिकता व संतुष्टि का बोध कराए उसका निर्माण करना चाहिए। उच्च शिक्षा प्रणाली प्रतिस्पर्धात्मक होने के साथ साथ उचित अनुचित एवं चरित्र निर्माण पर भी बल दे ऐसी होनी चाहिए। जिससे उच्च शिक्षा प्राप्ति के साथ ही मानव में युवाओं में उच्च व्यक्तित्व का निर्माण हो सके, तथा मानव परिवार, समाज, राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व के प्रति भी सजग हो।

शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त व्यावहारिक ज्ञान पर भी ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। बोधचर्यावतार ग्रंथ में व्यावहारिक शिक्षाओं के माध्यम से दुर्गुणों को दूर करने का ज्ञान प्राप्त होता है। बोधचर्यावतार के पंचम परिछेद में आत्मभाव की रक्षा, शुद्धता तथा विस्तार प्रतिपादन बड़े ही व्यावहारिक रूप से किया गया है, जो आज भी समाज के हित के लिए आवश्यक है। व्याख्या इस प्रकार है-

"कभी भी निरर्थक दृष्टि से निक्षेप नहीं करना चाहिए बल्कि ध्यान करते हुए की भाति दृष्टि नीचे रखनी चाहिए। दृष्टि को आराम देने के लिए कभी कभी दिशाओं की ओर भी देखना चाहिए और यदि किसी आगंतुक के आने का आभास मात्र मिल जाए तो स्वागत करने की इच्छा से उसकी ओर आत्मीयता से देखना चाहिए।"6

शिक्षा प्रणाली यदि शिक्षा प्रदान करने का सोपान है तो परीक्षा प्रणाली उसका लक्ष्य। शिक्षा प्रणाली के साथ ही परीक्षा प्रणाली में भी ऐसे परिवर्तन करने चाहिए जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान और मौलिक चिंतन का उचित परीक्षण एवं आँकलन हो सके। प्रमाण पत्रों में अंकों के स्थान पर ग्रेड का प्रावधान करना चाहिए, क्योंकि परीक्षा का उद्देश्य भारी भरकम अंक लाना नहीं बल्कि विद्यार्थियों का आंतरिक मूल्यांकन होना चाहिए।

राष्ट्रीय उत्थान, मौलिक चिंतन, मानसिक विकास, व्यावहारिक ज्ञान का विकास ये सभी गुण शिक्षा के प्रमुख आयाम होने चाहिए। उच्च शिक्षा प्रणाली ऐसे परिवर्तन किए जाने अपेक्षित है जो हमारे राष्ट्र को होनहार युवा पीढ़ी प्रदान कर सकें, जो मात्र अंकों को प्रमाण पत्र की शोभा ना बनाए बल्कि नए नए चिंतन और अपने उन्नतशील प्रयासों के बल पर राष्ट्र का उचित निर्माण कर सके। राष्ट्र का उचित निर्माण ही उन्नतिशील राष्ट्र के गठन में सहायक होता है।

प्रारंभ मे व्यवहारिक शिक्षा प्रणाली का प्रचलन था। गुरुकुल परंपरा के उन्नायक भारतदेश में कभी व्यावहारिक शिक्षा का बोलबाला था। अपनी व्यावहारिक शिक्षा प्रणाली के प्रभाव के कारण हम विश्वगुरु के रूप में जाने जाते थे, परंतु आधुनिक उच्च शिक्षा प्रणाली की व्यावहारिकता का स्थान यांत्रिकता ने ले लिया। हमारी संस्कृति और सभ्यता को खंड – खंड करने के लिए अंग्रेज बुद्धिजीवियों ने बड़े योजना अनुसार तरीके से हमारी भाषाओं और सांस्कृतिक गौरव पर निशाना साधा। परिणाम यह रहा की भारतीय अंग्रेजी पढ़ने लिखने और अंग्रेजी संस्कृति का अंधानुकरण करने को अपना सौभाग्य समझने लगे।

अंग्रेजी भाषा और संस्कृति को अपना कर अपनी संस्कृति को विस्मृत करके स्वयं को शिक्षित नागरिक की श्रेणी में गिनने वाले भारतीयों की कमी नहीं रही। अपनी भाषा, संस्कृति तथा धर्मग्रंथों की बात करना सभ्यता और उच्च शिक्षा के विरुद्ध हो गया। न स्वीकार करते हुए भी हमें यह मानना पड़ेगा कि आज भारत स्वतंत्रता के उच्च शिखर पर विराजमान होने के बाद भी अपनी संस्कृति और शिक्षा को स्वतंत्र नहीं करा पाया बल्कि अंग्रेजी सभ्यता के हाथों की कठपुतली बन गया है। समाज में युवाओं पर अंग्रेजी भाषा का मोह इस कदर बढ़ा है कि हमारा राष्ट्र अपने अस्तित्व को ही खो बैठा है।

शिक्षा का कार्य अपने राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता का प्रचार करना होता है, किन्तु आधुनिक समय में हमारी शिक्षा स्वयं का ही अस्तित्व नहीं बचा पा रही है, तो राष्ट्र गौरव की रक्षा कैसे संभव है। राष्ट्र के गौरव को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि अपनी राष्ट्रभाषा, संस्कृति व सभ्यता को संरक्षित रखने के प्रयास किए जाए, तभी हम अपने परिवार, समाज व राष्ट्र के अस्तित्व को स्थापित रख पाएंगे। परिवार से लेकर राष्ट्र तक का उचित विकास आदर्श शिक्षा पर ही निर्भर करती है। अतरू स्पष्ट है की यदि हम अपने राष्ट्र को प्रगतिशील बनाना चाहते हैं तो अपनी आदर्श शिक्षा प्रणाली को महत्व देना हमारा प्रदान कर्तव्य है।

निरंतर बढ़ती जनसंख्या से जनित आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक समस्याओं पर काबू पाने के लिए एक क्रांतिकारी शिक्षा

प्रणाली की आवश्यकता है, जो प्रतिवर्ष योजना दर योजना होने वाले सुधारों के द्वारा भी बनाई न जा सकी। वर्तमान उच्च शिक्षा मात्र प्रमाण दृ पत्र बन कर रह गई है, यह ना तो युवाओं को रोजगार प्रदान कर पा रही है और ना ही राष्ट्र के उत्थान में सहयोग दे पा रही है। राष्ट्रीय और मानवीय गुणों का विकास करना भी शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य होता है। इस क्षेत्र में भी हमारी उच्च शिक्षा असफल सिद्ध हुई है।

समाज में फैला भ्रष्टाचार, अनाचार, हिंसा, संप्रदायिकता, अनैतिकता का वातावरण इस बात का साक्षी है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था अपने मूल उद्देश्यों और कर्तव्यों से भटक गई है। आधुनिक उच्चशिक्षा प्रणाली में धार्मिक शिक्षा, नैतिकशिक्षा, राष्ट्रीय भावना और विद्यार्थियों के मानवीय गुणों को निखारने की क्षमता का नितांत अभाव है। शिक्षा मात्र कागज पर दिखती है व्यक्तित्व में नही। शिक्षा का उद्देश्य मल्टी नैशनल कंपनी में नौकरी पाना मात्र रह गया और क्यूँ ना हो जिन डिग्रियों को लाखों रूपियों में प्राप्त किया जा रहा है, उनसे कमाई करने की उम्मीद तो हर कोई रखेगा। कमाने की यही होड़ मानव को मानवीय संवेदना, मानवता और नैतिकता से दूर करती जा रही है।

उच्च शिक्षा प्रणाली की असफलता ने राष्ट्र के रूप में भी व्यापक क्षति पहुंचाई है, क्योंकि शिक्षा का सीधा संबंध राष्ट्र निर्माण से होता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय नैतिकता को उजागर नहीं कर पा रही इसलिए आवश्यकता है शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की। एक ऐसा शिक्षा तंत्र तैयार करने की जो शिक्षा के भारतीय भाषाओं में प्रचार प्रसार के साथ साथ हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक, व्यावहारिक और राष्ट्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखें। समस्त राष्ट्र में शिक्षा का स्वरूप समान नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों में पाठ्यक्रम और शिक्षा का स्तर भिन्न भिन्न है। एक ओर तो साधन सम्पन्न अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा प्रदान करने वाले भव्य विद्यालय है तो दूसरी ओर खपरैल की छत वाले टूटे फूटे साधनहीन तथा अध्यापनहीन सरकारी विद्यालय। लोकतंत्र की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण आयाम होता है नागरिकों का शिक्षित होना। लेकिन इतने वर्षों में भी हमारे राष्ट्र में प्राइमरी से लेकर उच्च स्तरों तक की शिक्षा अनिवार्य नहीं की जा सकी। 10 प्रतिशत लोगों को मिलने वाली उकक शिक्षा पर 80 प्रतिशत संसाधनों का खर्च होना और 80 प्रतिशत लोगों पर 20 प्रतिशत साधनों का खर्च करना हमारी योजना क्षमता की असफलताओं को उजागर करता है।

राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा का महत्वपूर्ण भूमिका होने के कारण यह हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम अपने देश के युवाओं की उच्च शिक्षा को इतना सशक्त बनाए कि राष्ट्रीय स्तर पर युवाओं के व्यक्तित्व का प्रभाव परिलक्षित हो सके। प्रारम्भिक शिक्षा को सरल और नैतिकशिक्षा से परिपूर्ण बनाना तथा उच्च शिक्षा प्रणाली को मजबूत बनाना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। यही राष्ट्रीय कर्तव्य देश के युवाओं का राष्ट्रीय अधिकार है। अतरू शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन आवश्यक है। सम्पूर्ण राष्ट्र में एक पाठ्यक्रम और शिक्षा कार्यक्रम को कार्यान्वित करवाया जाए।

शिक्षा ऐसी हो जो अपने राष्ट्र, संस्कृति, परिवेश, रीति रिवाज, परंपराओं पर गर्व करना सिखाए और अनेकता में एकता के प्रतीक भारतवर्ष के लोगों को समन्वय व भ्रातृत्व की भावना का विकास करवाए। ध्यान रहे की शिक्षा नैतिक, राष्ट्रीय व मानवीय मूल्यों का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से संचार करे। उच्च शिक्षा व्यवस्था सही अर्थों में सभी संकीर्णताओं, आज्ञानताओं, अंतर्विरोधों से मुक्त कराने वाली बने। तभी सच्चे अर्थों में हम शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों को पूरा कर पाएंगे तथा युवाओं के राष्ट्रीय अधिकार उन्हें प्रदान कर पाएंगे।

उचित शिक्षा व्यवस्था ही सही दिशा प्रदान करने में सक्षम होती है। आज समाज को शिक्षा के नाम पर दिखावे की आवश्यकता नहीं है बल्कि वास्तविक अर्थों में आदर्श, नैतिक व मानवीय गुणों का समावेश करने वाली नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है। जिसके माध्यम से युवा नागरिक नव चेतन, नई सोच, नवीन विचारों के द्वारा नवीन व आदर्श समाज का निर्माण करने में सफल हो सकें। एक उन्नति शील समाज ही प्रगति शील राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।

संदर्भ

1. मूल्यविमर्श, कमलशील, मानवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों पर केंद्रित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका, 2011
2. रवीन्द्रनाथ का शिक्षा शास्त्र, विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ सदन, कृष्णा गली नं 9, मौजपुर दिल्ली 110053
3. पेंस्टालॉजी संभावनाएं, जोहान हेनरिक, डिक्शनरी ऑफ मॉडर्न यूरोपियन हिस्ट्री, 1789
4. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की नई तालीम शिक्षा पद्धति का स्वरूप एवं शिक्षा दर्शन, शोधार्थी अनूप कुमात्र सिंह, शिक्षा विभाग बिरडा परिसर, हेमवदी नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखंड
5. अथर्ववेद संहिता, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, ब्रह्मवर्चस् शांतिकुंज
6. बोधचर्यावतार, पंचम परिछेद, श्लोक 35 ए 37

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एजुकेशन इन ऐसेण्ट इण्डिया, वाराणसीः नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्श, अल्तेकर एस0एस0
2. स्वतंत्र भारत में शिक्षा, दिल्लीः राजपाल एण्ड संस**,** कबीर, हुमायूँ एजुकेशन इन इण्डियाः टुडे एण्ड टुमारो, बड़ौदाः आचार्य बुक डिपो मुखर्जी, एस0एम0
3. लैण्ड मार्क्स इन द हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इण्डियन एजूकेशन नई दिल्ली, वाणी बुक्स
4. भारतीय शिक्षा का इतिहास, आगराः रामप्रसाद एण्ड संस**,** रावत प्यारे लाल
5. शिक्षा की चुनौतीः नीति सम्बन्धी परिपेक्ष्य 1985
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986.
7. भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्यायेंः डॉ0 माल्ती सारस्वत, डॉ0 एल0बी0 बाजपेयी, आलोक प्रकाशन कच्चा हाता, अमीना बाद, लखनऊ
8. शिक्षा–दर्शनः पं0 सीताराम चतुर्वेदी, वीरेन्द्र नाथ घोषा, माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद
9. भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएं, डॉ मल्टी सारस्वत, डॉ एल. बी. बाजपेयी, आलोक प्रकाशन, कच्चा हाता, अमीनाबाद, लखनऊै